

112, 15. कोपाविष्ट PANĀT. 40, 18. ५३, 7. ÇUK. in LA. (III) 34, 14. दुःखेन मक्ता R. 1, 37, 7. Spr. (II) 1042. शोकदुःखाभ्याम् MBh. 3, 2957. शोकाविष्ट Hit. 126, 17. चित्तया R. 1, 33, 8. भयेन मक्ता MBh. 5, 7446. कश्मलाविष्ट 7177. तमसा HARIV. 2318. Bhāg. P. 4, 28, 25. तपसा HARIV. 2522. अघर्मेण MBh. 13, 1304. दैवैः R. GORR. 2, 109, 66. विस्मयाविष्ट BHAG. 11, 14. MBh. 3, 2831. कृपया ३, 7159. करुणाविष्ट RĀGĀ-TAR. 2, 43. कर्षणा मक्ता R. 5, 14, 33. ज्वेन मक्ता von grosser Eile ergriffen 3, 60, 1. त्वराविष्ट 2, 111, 44. स्नेह्याशैर्बहुविधैराविष्टविषया जनाः behaftet mit MBh. 12, 6480. Vgl. भूताविष्ट (auch KATHĀS. 73, 293). — 6) आविश्य KATHĀS. 43, 60 fehlerhaft für आविश्य. — Vgl. आविश्य fg. — caus. eingehen machen, hineinbringen, hineinlassen; Jmd Etwas übergeben, mittheilen u. s. w. AV. 4, 30, 2 (vgl. RV. 10, 125, 3). मेधाम् 6, 108, 3. 18, 4, 48. राष्ट्रि श्रियम् AIT. Br. 8, 27. स्वस्त्यावेशितं यतः ist glücklich hineingeschoben ÇĀṆKH. ÇR. 12, 24, 6. उर्वं पुष्टं वसु AV. 7, 79, 3. तस्मिन्ना वेशया गिरः RV. 1, 176, 2. TS. 4, 4, 12, 2. — दाःस्थेनावेशितः eingeführt RĀGĀ-TAR. 8, 2130. आदित्यश्चन्द्रमा वायुः u. s. w. सर्वे ब्राह्मणमाविश्य सदान्मुपभुञ्जते in's Haus hineinlassen so v. a. bewirthen MBh. 13, 2115. fg. यो ऽन्यस्मिन् शरीरे योगयुक्तिः । अन्तःकरणमाविश्य (so ist st. आविश्य zu lesen) प्रविशेदिन्द्रियाणि च (die beiden acc. von आविश्य abhängig) hineinfahren lassen KATHĀS. 43, 60. ध्रुवोर्मध्ये प्राणमाविश्य BHAG. 8, 10. उत्सर्पणसूत्रं क्रमेणाविश्य BHAG. P. 4, 23, 15. सदसच्चैव मयावेशितमात्मनि MBh. 12, 13234. आविश्य मामात्मनि BHAG. P. 7, 10, 11. मयाविश्य मनः so v. a. richten auf BHAG. 12, 12. BHAG. P. 1, 9, 23. 5, 16, 3. 7, 1, 29. आत्मन्यात्मानमाविश्य 1, 9, 43. 3, 10, 4. व्य्यावेशितचित्ता MBh. 13, 1504. RAGH. 10, 28. BHAG. P. 5, 9, 6. 1, 5. अधोत्तज आविश्यता मतिः 5, 18, 9. 20, 25. आविश्यतधियम् — भगवति 9, 16, 11. 10, 22, 26. भारमाविश्य बन्धुषु aufladen, übertragen HARIV. 1621. व्य्याविश्य तयाज्ञया anheimstellen 10301.

— अन्वा 1) eingehen, fahren in, sich Jmdes bemächtigen: आत्मसृष्टमिदं विद्यमन्वाविश्य स्वशक्तिभिः BHAG. P. 10, 48, 19. क्रीश्च क्रोधश्च बीभत्सुं तपोनान्वाविवेश ह MBh. 1, 5389. मोक्षः 7, 1405. — 2) nachgehen, folgen, sich nach Etwas richten: यथा ह्येवेह प्रजा अन्वाविशति यथानुशासनम् KĀND. UP. 8, 1, 5. तं धर्मसुराः — नामृष्यत — विवर्धमानाः क्रमशस्तत्र ते ऽन्वाविशन्प्रजाः MBh. 12, 10800.

— अन्वा eingehen, eindringen —, fahren in: अनीकम् MBh. 7, 5812. खं वायुमग्निं सलिलं तथोर्वी समं ततो ऽन्वाविशते शरीरे 12, 7412. भयं नाभ्याविशेत्तत्र Eingang finden 4, 933.

— उपा 1) eingehen, eintreten in: पर्णशालाम् R. 3, 23, 2. आश्रमपदम् BHAG. P. 9, 13, 23. स्वधिष्ठयम् 3, 6, 19. 26, 50. प्रीतिश्च दुर्पोधनमुपाविशत् fahren in, kommen über MBh. 1, 5389. — 2) gerathen in: देवा भयमुपाविशन् R. GORR. 1, 63, 31. — Ueberall Formen mit dem Augment, aber die Bedeutungen sprechen für उपा, nicht für उप.

— समुपा sich an Etwas machen, beginnen: दीनो च समुपाविश (समुपाह् R. ed. Bomb., समुदाह् = कुरु Comm.) R. 1, 62, 22.

— न्या eingehen in RV. 10, 36, 4.

— निरा sich von Jmd (abl.) zurückziehen, — fern halten MBh. 12, 7127.

— प्रा kommen zu: दातारम् ÇĀṆKH. ÇR. 7, 18, 9. — caus. einlassen, hineinführen: वधं प्राति (so die ed. Bomb.) मन्यते नौ प्रावेश्य शर्वेष्वम्नि MBh. 8, 647. तया प्रावेशयिष्ये DAÇAK. 122, 8.

— व्या eindringen —, sich vertheilen in: पर्वतम् RV. 2, 24, 2. प्रज्ञाम् ÇAT. Br. 10, 3, 2, 15.

— समा 1) eintreten, betreten, eingehen —, fahren in, sich Jmdes bemächtigen: राजवेशम् MBh. 1, 7272. 3, 2882. वनम् HARIV. 676. Bhāg. P. 5, 8, 9. यजनम् 4, 4, 6. लङ्काम् BHATT. 8, 27. हंसकुलम् sich begeben unter BHAG. P. 5, 13, 17. जम्बूमार्गम् sich begeben auf MBh. 3, 4082. योगपथम् BHAG. P. 4, 4, 24. प्रपाश विपणांश्च यथोदेशं समाविशेत् (so ed. Bomb. st. समादिशेत् der ed. Calc.) sich begeben zu MBh. 12, 2648. तान्बाणाः समाविशन् drangen in 3, 12176. यदाणुमात्रिको भूताबीजं स्थासु चरिषु च । समाविशति M. 1, 56. सर्वलोकम् durchdringen HARIV. 9746. शब्दः स्पर्शश्च द्वयं च रसमात्रं (acc.) समाविशत् MĀRK. P. 43, 54. fg. अतान् fahren in (von einem bösen Geiste) MBh. 3, 2253. नलम् 2257. नाहमद्य समावेष्टुं शक्यः काम पुनस्त्वया Spr. 4324. कुब्जाः केन कृता यूयं समाविश्य डुरात्मना R. GORR. 1, 33, 23. नन्ददेहात्तरिन्द्रदत्तः समाविशत् KATHĀS. 4, 101. MĀRK. P. 31, 85. आत्ममायाम् BHAG. P. 4, 7, 51. चतुरपि प्रजानामोपतमश्चापि समाविवेश Finsterniss kam über HARIV. 16032. ग्लानिश्चैनं समाविशत् MBh. 1, 3142. दर्पः 3, 8493. कोपः 11092 (S. 372). मोक्षः R. 4, 60, 15. रजस्तमश्चैव MBh. 12, 13280. प्रमत्तमर्था हि नरं समत्तात्यजस्यनर्थाश्च समाविशति 10, 561. लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् einkehren Spr. 1381. — 2) sich niederlassen an einem Orte: तस्मिन्देशे MBh. 13, 1971. Platz nehmen auf, sich setzen: शय्यासने (loc.). M. 2, 119. R. 2, 87, 21. आसनम् Spr. (II) 1478, v. l. — 3) in einen Zustand eingehen, gerathen in: कोपम् MBh. 13, 2778. अहंकारम् 4752. — 4) gehen an, obliegen: तौस्तान्धर्मविधीन् R. 7, 10, 2. — 5) समाविष्ट ergriffen —, überwältigt von: रुद्राश्चासौ Spr. 1, 121, 10. शापः R. GORR. 1, 28, 12. मोक्षेन Spr. 4748. वराशोकः M. 6, 77. भयशोकः MBh. 3, 2273. तीव्रशोकः 2958. R. 2, 66, 8. मन्युः R. GORR. 1, 60, 7. कोपेन KĀM. NĪTIS. 14, 18. कोपः R. 1, 60, 11. क्रोधः 64, 11. MBh. 1, 5920. तीव्रोऽपः 3, 2397. रोषामर्षः R. GORR. 1, 76, 21. मदकामः MBh. 1, 7725. मन्मथः 4, 418. कामभारः R. 3, 23, 18. बाष्पः 2, 93, 1. कौतूहलः Verz. d. Oxf. H. 13, b, 42. fg. सन्नः erfüllt von BHAG. 18, 10. यथाकर्म versehen mit MBh. 14, 500. गुणः VET. in LA. (III) 2, 1. सर्वभोगः PANĀT. 1, 7, 51. योगेन च समाविष्टे भरद्वाजेन so v. a. unterwiesen in von MBh. 13, 1971. — Vgl. समावेश. — caus. 1) hineingehen lassen: das Glied KAUC. 79. प्रस्थं स्वस्मिन्समावेशयति कटाक्षः nimmt in sich auf, enthält P. 5, 1, 52, Schol. an einen Ort bringen, — führen: स्त्रीबालवृद्धानादाय — इन्द्रप्रस्थं समाविश्य BHAG. P. 11, 31, 25. eingehen lassen in so v. a. richten auf: आत्मानमात्मनि MBh. 12, 1590. तस्मिन्समावेशितचित्तवृत्तिः RAGH. 6, 70. भगवति मनः BHAG. P. 5, 8, 28. 9, 19, 28. 10, 46, 32. भगवति समावेशितसकलकारकक्रियाकलापः 5, 1, 6. — 2) sich setzen heissen: गातरि R. 7, 94, 9. — 3) aufbürden, übertragen: कथं डुरात्मनि समावेशयसे सर्वम् MBh. 2, 1544. पौत्रे भारम् 3, 9913. R. 1, 71, 14. तस्मिन्बाष्पम् R. GORR. 1, 44, 3. MĀRK. P. 53, 42. यस्मिन्कृत्यम् Spr. 2421.

— उप 1) Jmd (acc.) nahe treten: उपो नमोभिर्वृषभं विशिम् RV. 8, 83, 6. — 2) sich setzen (auch vom Niederliegen der Thiere) AIT. Br. 7, 5. 8, 10. कौतूषदने ÇAT. Br. 1, 5, 2. 13, 4, 3. 1. KAUC. 79. उपविश्य दत्तिपां ज्ञान्वाच्य KĀTJ. ÇR. 3, 7, 5. उपविश्योर्ध्वज्ञानुः ÇĀṆKH. ÇR. 1, 3, 8. ĀÇV. GRHJ. 2, 3, 7. 3, 2, 2. KAUSH. UP. 2, 1. BHAG. 1, 47. MBh. 3, 464. 2884. 16810. 4,